



## उतार चढाव

मुकेश नेगी

रिम झम बारिश के अफ़साने  
जिन्दगी के उतार चढाव में  
भगापन छोड़ जाते हैं

क लयां खलने लगती हैं  
मन मदहोशी का रंग रंग  
देती है

कई बार पगडं डयों से गुजरते हुए  
बच्चपन की यादें ताजा होती है

जिन्दगी धीरे से गुजर बसर जाये  
आस पगडं डयों में टीकी रहती है

दिन चाहे जितनी भी मदहोश हो  
रात जिन्दगी का सफर मोड़ ले जाती है

पहाड़ पगडं डयो के निकट प्रतीत होते हैं  
इनमें गुजरते हुए जिन्दगी के लम्हे बीतते हैं।